सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 39 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 11 मार्च, 2025
मूल्य ₹ 3/-

हिन्दू राम के भक्त हैं और तुर्क (मुस्लिम) को रहमान प्यारा है। इसी बात पर दोनों लड़-लड़ कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।
-कबीर दास

खिताबी जीत के बाद स्वदेश लौटी... 7 | परिसीमन को लेकर बढ़ रही... 3 | यूपी में कानून व्यवस्था हो गई... 2

संघ प्रमुख के बयान का होने लगा है असर

तमिलनाडु में तीसरा बच्चा पैदा करने पर मिलेगी गाय और नगद उपहार

» चिदंबरम की प्रतिक्रिया- देश ने जो अभी तक पाया है वह उलट जायेगा

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। नागपुर में आयोजित कथाले कुल सम्मेलन में संघ प्रमुख ने हिंदुओं से तीन बच्चे पैदा करने की अपील की थी। उनकी इस अपील का असर होने लगा है और शुरुआत तमिलनाडु से हो गयी है। आंध्र प्रदेश के टीडीपी सांसद कालीसेट्टी अप्पाला नायडू द्वारा तीसरे बच्चे को जन्म देने वाली महिलाओं को 50,000 रुपये नकद देने की बाकायदा घोषणा हो चुकी है।

यही नहीं सांसद ने कहा है कि यदि कोई महिला लड़का पैदा करती है तो उसे एक गाय भी उपहार में दी जायेगी। उनकी इस घोषणा का विरोध पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम समेत दूसरे नेताओं ने शुरू कर दिया है। सभी का यही कहना है कि इस बयान का असर गलत होगा। देश ने जो पिछले 70 सालों में हासिल किया है वह सब उलट सकता है।

अब स्थिर होना शुरू हुई है आबादी

आंकड़ों के मुताबिक भारत की आबादी अब स्थितर होना शुरू हुई है। ऐसे में यदि सभी लोग तीन बच्चे पैदा करने लगेंगे तो आबादी की सुनामी आ जाएगी जोकि भारत के लिए नकारात्मक होगा। पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम ने कहा है कि भारत पहले से ही दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है, और अब हमारी जनसंख्या स्थिर हो रही है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, 2062 तक भारतीय जनसंख्या अपने चरम पर पहुंचने की उम्मीद है, इसके बाद इसमें गिरावट देखने को मिलेगी। चिदंबरम ने इस पहल को अदूरदर्शी और गलत करार दिया है। चिदंबरम ने कहा कि इस तरह का आह्वान, जिसमें तीसरे बच्चे के लिए प्रोत्साहन देने की बात की गई है, भारत के लिए नकारात्मक होगा।

घट रही है हिंदू आबादी

देश भले ही इस वर्ष आबादी के मामले में लंबी छलांग लगाते हुए पूरे विश्व में नम्बर एक की स्थिति में आ गया हो लेकिन देश में हिंदू आबादी घटी है। भारत में बहुसंख्यक हिंदू पिछली जनगणना में 80 प्रतिशत थे जो अब इस साल तक उनकी जनसंख्या वृद्धि दर घटने से देश में उनकी कुल आबादी घटकर 78.9 प्रतिशत ही रह गई है। जबकि हिंदू आबादी अब भी देश में करीब 1.094 अरब है। पूरे विश्व के 95 प्रतिशत हिंदू भारत में रहते हैं। जबकि देश में मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर बढ़ी है।

सीएम नायडू पहले ही कर चुके हैं अपील

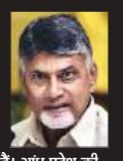

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने भी दो से अधिक बच्चा पैदा करने की अपील की थी। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत के राज्यों के लोगों को ज्यादा बच्चा पैदा करने की जरूरत है। दक्षिण में बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है। गांव खाली हो रहे हैं। आंध्र प्रदेश की सरकार दो से अधिक बच्चा पैदा करने वाले परिवारों को प्रोत्साहन राशि देने पर भी विचार कर रही है। सरकार यह भी कानून बनाने की तैयारी में है कि दो से अधिक बच्चे वाले लोग ही स्थानीय निकाय का चुनाव लड़ने के योग्य होंगे। नायडू का कहना है कि गांवों से युवाओं के पलायन की वजह से समस्या और विकराल हो गई है।

शिशु मृत्यु दर को कम किया जाए : पी. चिदंबरम

पी. चिदंबरम के मुताबिक अभी हमारे पास 37 साल बाकी हैं और माता-पिता को अधिक बच्चे पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करना पिछले 70 सालों में जो भी हमने प्राप्त किया है उसे उलट देगा। उन्होंने कहा कि देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह नहीं है कि अधिक बच्चे पैदा किए जाएं। बल्कि चुनौती यह है कि शिशु और मातृ मृत्यु दर को कम किया जाए। साथ ही बच्चों को पहले 5 वर्षों में बेहतर पोषण और देखभाल मिले। गौरतलब है कि आंध्र प्रदेश में तीसरे बच्चे को जन्म देने वाली महिलाओं को 50,000 रुपये की नकद प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। इसके अलावा, यदि महिला लड़के को जन्म देती है, तो उसे एक गाय भी उपहार के रूप में दी जाएगी। यह घोषणा राज्य के विजयनगरम से तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के सांसद कालीसेट्टी अप्पाला नायडू ने की।

ओडिशा विस में लोकतंत्र शर्मसार, भाजपा व बीजद में हाथापाई

» भाजपा विधायक जयनारायण मिश्र के विवादित बयान से गरमाया माहौल

» सारे देश में बीजेपी पर हुआ विपक्ष हमलावर

» कांग्रेस विधायक तारा प्रसाद वाहिनीपति ने लगाए भाजपा विधायक पर गंभीर आरोप

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भुवनेश्वर। ओडिशा विस में लोकतंत्र को शर्मसार करने वाला मामला सामने आया है। भाजपा विधायक जयनारायण मिश्र के विवादित बयान को लेकर उपजे विवाद को लेकर सदन में भाजपा व बीजद के विधायकों के बीच हाथापाई हो गई है। ओडिशा के इतिहास में पहली बाहर किसी प्रसंग को लेकर शासक एवं विरोधी दल के विधायकों के बीच हाथापाई होने की घटना सामने आई है।

उप्र एवं बिहार जैसे राज्य के विधानसभा में शासक-विरोधी के बीच माइक फेकने, मारपीट की घटना देखे को मिलती रही है। परन्तु पहली बार ओडिशा विधानसभा में इस तरह की स्थिति देखने को मिली है। ओडिशा में पश्चिम ओडिशा के मिलने को ऐतिहासिक भूल होने की बात कुछ दिन पहले भाजपा विधायक जयनारायण मिश्र ने एक सरकारी सभा में कही थी। इसके साथ ही सभा में जब राज्य की गीत वंदे उत्कल जननी का गान चल रहा था तब वह अपनी सीट से खड़े नहीं हुए। कांग्रेस एवं बीजद के विधायकों ने इसके खिलाफ सदन के मध्य भाग में आकर प्रतिवाद किया।

कांग्रेस विधायक ने कॉलर खींचने का लगाया आरोप

कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक तारा प्रसाद वाहिनीपति ने कहा है कि जय नारायण मिश्र एवं भाजपा के विधायकों ने मेरी कालर पकड़ी, मुझे गाली दी। 25 वर्ष से मैं विधायक हूं ऐसी स्थिति कभी नहीं देखी। स्पीकर से हम अनुरोध कर रहे थे, मगर वह नहीं सुनी। सदन में भाजपा विधायक इस तरह से मारपीट कर रहे हैं, तो फिर सदन के बाहर वे क्या करते होंगे,यह सोचने की बात है। महिलाओं को सुरक्षा देने में सरकार विफल है। विधायक के निलंबन की मांग की है।

भाजपा विधायक की सफाई

वहीं भाजपा विधायक अशोक महांति ने कहा है कि ओडिशा शासन की जिम्मेदारी भाजपा को लोगों ने दिया है। तीन दिन से विरोधी दल सदन नहीं चलने दे रहे हैं। आज भी जैसे ही प्रश्नोत्तर शुरू हुआ, विरोधी दल नारेबाजी करने लगे।मंत्री पर हाथ उठाए।हम कहना चाहते हैं, आप अपनी बात विधानसभा अध्यक्ष से कह सकते हैं, परन्तु किसी मंत्री के ऊपर आप हाथ नहीं उठा सकते हैं। विधानसभा में अराजकता को देखते हुए विधानसभा अध्यक्ष सूरमा पाढ़ी ने हस्तक्षेप किया मगर कोई लाभ नहीं हुआ। हंगामा जारी रहने के कारण विधानसभा अध्यक्ष ने सदन की कार्यवाही को स्थगित कर दिया।

राज्यसभा में खरगे के बयान पर मचा बवाल

संसद के बजट सत्र में नई शिक्षा नीति का मुद्दा छाया हुआ है। पक्ष और विपक्ष के बीच इसे लेकर जमकर हंगामा देखने को मिल रहा है। इसी बीच मंगलवार को राज्यसभा में नेता विपक्ष मलिकार्जुन खरगे ने एक ऐसा बयान दिया, जिस पर सदन में खूब हंगामा हुआ। दरअसल, खरगे ने शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के बयान की निंदा की। जब उपसभापति की ओर से खरगे को बोलने से रोका गया तो वो गुस्सा गए। यहां तानाशाही चल रही है। इस पर जब उपसभापति की ओर से उन्हें फिर बोलने से रोका गया तो क्या-क्या ठोकना है हम ठीक से ठोकेंगे।

यूपी में कानून व्यवस्था हो गई है बदहाल : सपा

सीतापुर में पत्रकार की हत्या का मामला लोस में गूंजा

» सपा सांसद आनंद भदौरिया ने सीबीआई जांच की मांग की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में हुए पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की हत्या का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। इस हत्याकांड को लेकर प्रदेशभर के पत्रकारों में रोष देखा जा रहा है। इस हत्याकांड के मुद्दे को लेकर समाजवादी पार्टी ने योगी सरकार पर जमकर हमला बोला है। सपा सांसद आनंद भदौरिया ने लोकसभा में आवाज उठाई है।

सपा सांसद ने पीड़ित परिवार को 50 लाख का मुआवजा देने के साथ ही मृतक की पत्नी को सरकारी नौकरी दिए जाने की मांग की है। इसके साथ ही सपा सांसद ने इस पूरे मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग की है। बता दें कि रविवार को पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की हेमपुर नेरी रेलवे क्रॉसिंग के ओवरब्रिज के पास गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। हमलावरों ने पहले पत्रकार की बाइक को टक्कर मारकर रोका और फिर गोलियों की बौछार कर दी, जिससे पत्रकार की मौके पर ही मौत हो गई थी। धौरहरा लोकसभा सीट से समाजवादी पार्टी के सांसद आनंद भदौरिया ने सदन में बताया कि हमारी लोकसभा क्षेत्र के महोली इलाके के एक नौजवान पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई की एनएच-24 पर दिनदहाड़े हत्या कर दी गई है। उन्होंने बताया कि मृतक के दो बच्चे हैं और पिता भी बीमार रहते हैं।

राघवेंद्र बाजपेई की पत्नी को सरकारी नौकरी मिले

इसके साथ ही सपा सांसद आनंद भदौरिया ने पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपये का मुआवजा देने की भी मांग की है। साथ ही मृतक राघवेंद्र बाजपेई की पत्नी को सरकारी नौकरी दिए जाने की भी मांग की है। वहीं, इस हत्याकांड से सीतापुर ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेशभर के पत्रकार नाराज हैं और आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। फिलहाल पुलिस ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए कई टीमें लगाई हैं। साथ ही कई लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ भी की जा रही है।

विस चुनावों में अलग हो सकती हैं कांग्रेस और सपा की राहें!

कांग्रेस और सपा ने प्रदेश में लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ा था और इसके बेहतर परिणाम भी हासिल किए थे। लेकिन, कांग्रेस एक के बाद एक राज्य चुनाव हारती जा रही है। सपा नेताओं का मानना है कि यूपी में भी कांग्रेस का कोई जनाधार नहीं है। इसलिए सिर्फ लड़ने के लिए उसे सीटें नहीं दी जा सकती। सपा सूत्रों का कहना है कि आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर सपा ज्यादातर सीटों पर अभी से तैयारी कर रही है। अगर कांग्रेस 25-35 सीटों पर मानती है तो ठीक, वरना जिस तरह से दिल्ली और हरियाणा में इंडिया गठबंधन के घटक दल कांग्रेस और आप अलग-अलग लड़े थे, उसी तरह से यहां भी सपा और कांग्रेस के रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं। यहां बता दें कि यूपी में कुल 403 विधानसभा सीटें हैं।

कानून उल्लंघन पर होगी कार्रवाई : उमर

» सीएम उमर ने कहा- सरकार कभी भी ऐसी अनुमति नहीं देती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीनगर। रमजान महीने के दौरान गुलमर्ग में आयोजित फैशन शो को लेकर विवाद के बीच जम्मू और कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि उनकी सरकार किसी भी महीने में ऐसे कार्यक्रम के लिए अनुमति नहीं देती। फैशन शो को कई लोगों ने अश्लील करार दिया है और विधानसभा में इसका विरोध हुआ है।

मुख्यमंत्री ने विधानसभा में कहा हमने इस मामले की जांच का आदेश दिया है, लेकिन प्रारंभिक तथ्यों के अनुसार यह एक निजी चार दिन का आयोजन था जो एक निजी पार्टी द्वारा एक निजी होटल में आयोजित किया गया था। यह फैशन शो 7 दिसंबर को हुआ था और कुछ चीजें सामने आई हैं जिनसे लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंची है। कश्मीर के प्रमुख मौलवी मीरवाइज उमर फारूक ने कहा था कि पर्यटन के नाम पर अश्लीलता को सहन नहीं किया जाएगा। मीरवाइज ने अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट करते हुए कहा यह भद्दा है, रमजान के पवित्र महीने में गुलमर्ग में एक अश्लील फैशन शो आयोजित किया गया, जिसकी तस्वीरें और वीडियो वायरल हो गए हैं, जिससे लोगों में आक्रोश और हैरानी फैल गई है। इस पोस्ट पर प्रतिक्रि या देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा आक्रोश और हैरानी पूरी तरह से समझने योग्य है। जो तस्वीरें मैंने देखी हैं, वे स्थानीय संवेदनाओं की पूरी अनदेखी करती हैं, और वह भी इस पवित्र महीने के दौरान।

विधायक केतकी के बयान पर सपा ने बीजेपी को घेरा

» सपा बोली- विधायक पीडीए विरोधी

» मेडिकल कॉलेज में मुस्लिमों के लिए अलग बिल्डिंग बनवाने की बात कही थी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बलिया। बीजेपी विधायक केतकी सिंह ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने ऐसी मांग रख दी है जो चर्चा का विषय बन गया है। सपा समेत विपक्षी दलों ने इसकी आलोचना की है। केतकी सिंह ने बलिया में बन रहे मेडिकल कॉलेज में मुस्लिमों के लिए अलग बिल्डिंग और अलग विंग बनवाने की मांग की है ताकि हिंदू उनसे सुरक्षित रह सके। केतकी सिंह ने कहा कि मुसलमानों को होली, रामनवमी और दुर्गा पूजा से दिक्कत होती है।

हम लोगों के साथ इलाज कराने में भी उनको दिक्कत हो सकती है। मैं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग करती हूं जब मेडिकल कॉलेज में इतना खर्च हो ही रहा है तो मुस्लिमों के लिए एक अलग बिल्डिंग और अलग विंग बना दिया जाए ताकि वे वहां जाकर अपना इलाज करवा सकें। अगर आपको हमारे साथ रहने में दिक्कत है तो। सपा ने केतकी सिंह के बयान की कड़ी निंदा की है। सपा प्रवक्ता फखरुल हसन चांद ने कहा कि केतकी सिंह का बयान पीडीए के खिलाफ है।

दिल्ली में भाजपा सरकार, फिर भी कानून व्यवस्था खराब : कुलदीप

» अपराधी बेखौफ, युवक की हत्या को लेकर आप भाजपा पर हमलावर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने दिल्ली की बिगड़ती हुई कानून व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। पार्टी का कहना है कि दिल्ली में अब भाजपा की सरकार है, लेकिन स्थिति और खराब हो गई है। आम आदमी पार्टी के विधायक कुलदीप कुमार ने पार्टी मुख्यालय में कहा कि गाजीपुर इलाके में सोमवार को सुबह पांच बजे सड़क पर एक युवक की गोली मारकर हत्या कर दी।

विधायक कुलदीप कुमार ने कहा कि दिल्ली में अपराध को रोकने के लिए केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और पुलिस के साथ संयुक्त बैठक की। दिल्ली में हत्या, लूट व चोरी की वारदातें बढ़ रही है, लेकिन मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता समेत पूरी भाजपा इस पर मौन है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता दिल्ली के लोगों को सुरक्षा देने में असमर्थ साबित हो रही हैं। भाजपा की डबल इंजन की सरकार लोगों को अच्छी कानून-व्यवस्था नहीं दे पा रही है।

सीएम रेखा गुप्ता को एक पत्र लिखूंगा

कुलदीप कुमार ने कहा कि कानून-व्यवस्था के मसले पर कोंडली विधानसभा के लोगों के साथ सीएम रेखा गुप्ता से मिलूंगा और उनसे दिल्ली की कानून-व्यवस्था को दुरुस्त करने पर काम करने की मांग करूंगा। कानून-व्यवस्था के मसले पर मिलने के लिए सीएम रेखा गुप्ता को एक पत्र भी लिखूंगा। पिछले सप्ताह भी कोंडली विधानसभा क्षेत्र के गाजीपुर स्थित पेपर मार्केट और दल्लूपुरा में एक ही व्यक्ति ने दो हत्याएं की।

दिल्ली में बढ़ा नशा : प्रियंका कक्कड़

दिल्ली में बढ़ता नशा को लेकर आप ने भाजपा पर निशाना साधा। आप प्रवक्ता प्रियंका कक्क ड़ ने कहा कि दिल्ली में बढ़ते नशे पर लगाम कसने में भाजपा पूरी तरह फेल साबित हुई है। आज पूरी दिल्ली में लोग इससे परेशान हैं और सीएम रेखा गुप्ता से नशे की समस्या को खत्म करने के लिए गुहार लगा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा को ड्रग्स के धंधे पर लगाम कसने के लिए पंजाब की आप सरकार से सीखना चाहिए।

श्री राम का जवाब जय शिवाजी-जय भवानी से दें : उद्धव ठाकरे

» बोले शिवसेना यूबीटी के नेता- भाजपा की देशभक्ति सिर्फ छलावा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे ने भारतीय जनता पार्टी पर समाज में विभाजन पैदा करने और जहर घोलने का आरोप लगाया। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए अपने समर्थकों से जय श्री राम के जवाब में जय शिवाजी और जय भवानी कहने का आग्रह किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि जो कोई भी जय श्री राम कहता है, उसे जय शिवाजी और जय भवानी भी कहना चाहिए।

उन्होंने भाजपा के कार्यों का कड़ा विरोध किया और कहा कि उनका इरादा उनके सामाजिक प्रभाव को चुनौती देना है। भाजपा ने हमारे समाज में जहर घोल दिया है। मैं भाजपा को कड़ी चुनौती दूंगा, क्योंकि उन्होंने हमारे समाज के साथ जो किया है। ठाकरे ने भाजपा के देशभक्तिपूर्ण रुख पर सवाल उठाते हुए अंतरराष्ट्रीय खेलों पर उनके बदलते रुख का जिक्र किया। पाकिस्तान के साथ मैचों के विरोध के बावजूद भारत अब पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों के साथ क्रिकेट खेलता है। ठाकरे ने सुझाव दिया कि यदि फडणवीस उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहते हैं, तो उन्हें 10 मार्च के बजट में किसान ऋण माफी को लागू करना चाहिए और शिव भोजन और लड़की बहन कार्यक्रमों के लिए धन बढ़ाना चाहिए।

परिसीमन को लेकर बढ़ रही उलझन

दक्षिणी राज्यों में गरमाई सियासी बहस

» स्टालिन से लेकर नायडू तक मुखर

» सरकार और विपक्ष दोनों हैं परेशान

» आखिर कैसे निकलेगा समाधान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। चुनाव नजदीक है, तो तमिलनाडु में हिंदी विरोध की आवाजें तेज हो गई हैं। डीएमके प्रमुख स्टालिन अपनी कुर्सी बचाने की जद्दोजहद में हैं। उन्हें एक्टर विजय की नई पार्टी तमिलग वेट्री कजगम से भी चुनौती मिल रही है। ऐसे में स्टालिन ने लोकसभा सीटों के परिसीमन का मुद्दा उठाकर माहौल गरमा दिया है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया भी उनका साथ दे रहे हैं।

दक्षिणी राज्यों को केंद्र से अधिक टैक्स हिस्सा देने की मांग भी एक और मुद्दा है। उधर इस मुद्दे पर संसद में भी हुगा हुआ। इस मामले में देश के शिक्षामंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने डीएमके व सीएम स्टालिन पर जमकर हमला बोला है। भाषा और टैक्स के मुद्दे शायद जल्द ही शांत हो जाएं, लेकिन परिसीमन एक ऐसा मसला है जो कभी भी फूट सकता है। दक्षिणी राज्यों को डर है कि ज्यादा आबादी वाले हिंदी भाषी राज्यों को उनकी कीमत पर ज्यादा लोकसभा सीटें मिल जाएंगी। इस डर को दूर करना जरूरी है, लेकिन 1971 की जनसंख्या के आधार पर मौजूदा सीटों के अनुपात को बनाए रखने के तर्क गलत हैं और इन्हें खारिज किया जाना चाहिए।

ज्यादा आबादी वाले राज्यों को दक्षिण की कीमत पर ज्यादा सीटें देने के पक्ष और विपक्ष में तर्क

ज्यादा आबादी वाले राज्यों को दक्षिण की कीमत पर ज्यादा सीटें देने के पक्ष और विपक्ष में तर्क अन्याय से जुड़े हैं। दक्षिण का कहना है कि परिसीमन से संसद में उनकी आवाज कमजोर हो जाएगी। चाहे सीटें कम हो जाएं या बढ़ी हुई लोकसभा में उनका अनुपात घट जाए। लेकिन हिंदी भाषी राज्य भी अन्याय का दावा कर सकते हैं क्योंकि उन्हें उनकी आबादी के हिसाब से कम सांसद मिलते हैं। केरल का एक सांसद औसतन 18 लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि राजस्थान का एक सांसद 33 लाख लोगों का। यह लोकतंत्र के मूल नियम के खिलाफ है, जहां हर मतदाता की आवाज का बराबर महत्व होना चाहिए।

निर्वाचन क्षेत्रों के आकार पर पड़ेगा प्रभाव

अगर हिंदी भाषी क्षेत्र में संसदीय क्षेत्रों की संख्या बढ़ जाती है तो क्या होगा। इसका मतलब है कि निर्वाचन क्षेत्रों का आकार छोटा हो जाएगा, और जब ऐसा होता है तो क्या इससे ज्यादा अल्पसंख्यक सांसदों के चुने जाने की संभावना नहीं बढ़ेगी क्योंकि उनके जनसंख्या अनुपात में सापेक्षिक रूप से वृद्धि होती है? यह उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में आसानी से हो सकता है, केरल और असम की तो बात ही छोड़ दीजिए। क्या **INDIA**, जो अल्पसंख्यक वोटों पर काफी हद तक निर्भर है, केवल दक्षिणी सहयोगियों को खुश करने के लिए अपने सबसे मजबूत समर्थन आधार को नजरअंदाज करने जा रहा है?

टीएफआर पर भी रार

अगर 50 साल पहले टीएफआर (टोटल फर्टीलिटी रेट) कम करना अच्छी बात मानी जाती थी, तो आज दक्षिणी राज्यों को प्रजनन दर 2.1 से नीचे जाने देने के लिए कमजोर प्रदर्शन करने वाला कहा जाना चाहिए। तमिलनाडु, आंध्र और कर्नाटक में टीएफआर 1.7 से 1.8 के बीच है। केवल पांच राज्य 2.1 से ऊपर हैं– बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, मेघालय और मणिपुर। इनमें से केवल बिहार का टीएफआर लगभग 3 है, जो बहुत ज्यादा है। उत्तर प्रदेश 2.35 पर है, और लगातार घट रहा है। कुछ राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों का टीएफआर कम हो रहा है। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश, जहां कामकाजी उम्र की आबादी का अनुपात अगले दो दशकों तक बढ़ता रहेगा, हिंदी भाषी क्षेत्रों के उच्च टीएफआर के कारण है।

कम जनसंख्या की वजह से दक्षिण भारत के राज्यों को नुकसान : स्टालिन

तमिलनाडु के सीएम स्टालिन ने कहा कि कम जनसंख्या की वजह से दक्षिण भारत के राज्यों को नुकसान होगा। दक्षिण भारत के राज्य अक्सर ये आरोप लगाते हैं कि जनसंख्या नियंत्रित करने का उन्हें इनाम की जगह दंड मिलता है। राजस्व में उनकी हिस्सेदारी घट जाती है और उत्तर भारत के उन राज्यों को ज्यादा राजस्व दिया जाता है जो जनसंख्या नियंत्रित करने में नाकाम रहे हैं। 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों का भी दक्षिण भारत के कुछ राज्यों ने इसी आधार पर विरोध किया था कि राजस्व वितरण के फॉर्मूले में जनसंख्या को भी वेटेज दिया गया था। अगले वर्ष तमिलनाडु में होने वाले चुनावों से पहले, स्टालिन और उनकी सरकार केंद्र की हिंदी थोपने और परिसीमन का जोरदार विरोध कर रही है, उनका तर्क है कि इनमें से कोई भी आवश्यक नहीं है और कुल मिलाकर यह संविधान की संघीय प्रकृति और तमिल लोगों और भाषा पर हमला है। केंद्र ने दोनों आरोपों को खारिज कर दिया है, तथा थोपने के दावों का जवाब देते हुए कहा है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति और त्रिभाषा फार्मूला किसी भी छात्र को हिंदी पढ़ने के लिए बाध्य नहीं करता है, तथा परिसीमन की आलोचना को यह कहते हुए टाल दिया है कि दक्षिणी राज्यों को इससे कोई नुकसान नहीं होगा। स्टालिन की प्रस्तावित बैठक में बाद की चिंता को संबोधित करने की उम्मीद है, जिसके बारे में तमिलनाडु के नेता ने चेतावनी दी कि इससे उन राज्यों का प्रभाव कम हो सकता है जो जनसंख्या के स्तर को नियंत्रित करने में कामयाब रहे हैं। अपने पत्र में, उन्होंने बताया कि 1976 के बाद परिसीमन अभ्यास को 2002 के संशोधन द्वारा रोक दिया गया था, जब भाजपा के अटल बिहारी वाजपेयी प्रधान मंत्री थे – जिसमें कहा गया था कि लोकसभा सीटों की कुल संख्या में परिवर्तन – अब 543 – कम से कम 2026 तक स्थगित रहेगा।

परिसीमन पर समय आने पर बात करेंगे : नायडू

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने चिंता जताई है कि परिसीमन से दक्षिणी राज्यों को नुकसान होगा। लेकिन नायडू ने कहा कि वे इस मुद्दे पर सही समय पर बात करेंगे। परिसीमन हर 25 साल में होता है। नायडू जी ने दिल्ली में मीडिया से कहा, परिसीमन एक सतत प्रक्रिया है, जो हर 25 साल में होती है। हम अनुमान नहीं लगा सकते; हम समय आने पर इसके बारे में बात करेंगे।

परिसीमन से पहले एक राजनीतिक समझौता हो

इसके बावजूद, इसमें कोई संदेह नहीं है कि किसी भी परिसीमन से पहले एक राजनीतिक समझौता होना चाहिए, न कि केवल विधायी समर्थन से फैसला लिया जाना चाहिए। बाद वाला रास्ता चुनने से ज्यादा मतभेद पैदा होंगे, जिससे भाषा विवाद मामूली लगने लगेंगे। आगे बढ़ने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं। अगर भाजपा स्पष्ट रूप से घोषणा करती है कि परिसीमन 2031 की जनगणना के बाद ही लागू होगा, तो चिंताएं कम हो सकती हैं क्योंकि कानून कहता है कि परिसीमन 2026 के बाद पहली जनगणना पर आधारित होगा।

उत्तर में डीएमके के सहयोगी इतने चुप

अगर दक्षिण के तर्क इतने मजबूत हैं, तो उत्तर में डीएमके के सहयोगी इतने चुप क्यों हैं, जिनमें वे क्षेत्रीय दल भी शामिल हैं जो हिंदी भाषी क्षेत्र में भाजपा का मुख्य विरोध करते हैं? क्या अखिलेश, तेजस्वी, सोरेन और मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस के प्रमुख परिसीमन के लिए 1971 को आधार मानने को तैयार हैं? यहां तक कि अगर टीएफआर में कमी राज्यों को पुरस्कृत करने का एकमात्र आधार होती, तो इस तथ्य को कैसे सही ठहराया जा सकता है कि 2001 में एससी/एसटी के लिए सीटें क्रमशः 79 से 84 और 41 से 47 कर दी गईं? तो जनसांख्यिकीय रूप से कमजोर प्रदर्शन एससी/एसटी को राजनीतिक रूप से ज्यादा सीटें देने का आधार है, लेकिन सभी राज्यों के लिए नहीं? राहुल गांधी शैक्षिक और नौकरी कोटा बढ़ाने के लिए जातिगत जनगणना की मांग करते हैं। फिर उन्हें समझना चाहिए कि इसी जनगणना से तो पता चलेगा कि कम टीएफआर वाले ओबीसी और उच्च वर्गों को कम राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिला है।

2021 की जनगणना पूरी नहीं करवा पाई भाजपा

भाजपा को आज तक 2021 की जनगणना पूरी नहीं करने के लिए खुद को दोषी मानना चाहिए। 2026 के बाद (लेकिन 2031 से पहले) किसी भी जनगणना का उपयोग करना भाजपा के लिए राजनीतिक रूप से बहुत सुविधाजनक लगता है, जिससे यह प्रक्रिया निष्पक्ष लगे। सभी बड़े राज्यों को लोकसभा में ज्यादा सीटें दी जा सकती हैं, भले ही जनसंख्या परिवर्तनों को समायोजित करने के लिए अनुपात के हिसाब से कमी आए। अनुपातिक रूप से सीटें गंवाने वाले राज्यों के लिए अतिरिक्त रूप से मनोनीत राज्यसभा सीटों से भरपाई की जा सकती है। लोकतंत्र की असली भावना आम सहमति है और भाजपा के लिए यह समझदारी होगी कि वह बिना आबादी वाले राज्यों को नुकसान पहुंचाए या दक्षिण की संवेदनशीलता को ठेस पहुंचाए सभी दलों की आम सहमति हासिल करे। गलत तर्क एक खुशहाल संघीय शासन का रास्ता नहीं हैं। खासकर स्टालिन एंड कंपनी की दलील तो बिल्कुल उचित नहीं है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

मोटे अनाज को सरकार के मोटे समर्थन की चाह

मोटा अनाज मानव सभ्यता के इतिहास में पहली बार उगाई गई फसलों में से एक था। भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों से इनकी खेती और उपयोग के प्रमाण मिले हैं। पूर्व-हड़प्पा काल (2300-2000 ईसा पूर्व) में बनावली और कुनाल में ज्वार (सोरघम) की खेती के प्रमाण मिले हैं।

भारत सरकार मोटे अनाज को बढ़ावा देने की बड़ी-बड़ी बातें करती हैं पर उसका बड़े स्तर पर समर्थन नहीं करती है। यही कारण है कि इसका उत्पादन उतना नहीं बढ़ पा रहा है जितना सरकार चाह रही है। मोटे अनाजों की लोकप्रियता न बढ़ने का एक कारण उसकी खेती में लागत का ज्यादा आना और उसकी कीमत न निकलना भी है। मोटा अनाज मानव सभ्यता के इतिहास में पहली बार उगाई गई फसलों में से एक था। भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न पुरातात्विक स्थलों से इनकी खेती और उपयोग के प्रमाण मिले हैं। पूर्व-हड़प्पा काल (2300-2000 ईसा पूर्व) में बनावली और कुनाल में ज्वार (सोरघम) की खेती के प्रमाण मिले हैं। निओलिथिक काल (2000-1200 ईसा पूर्व) में हल्लूर और कन्वर में बाजरा (पर्ल मिलेट) और परिपक्व हड़प्पा काल (2500-2000 ईसा पूर्व) में रोजड़ी और ओरियो टिम्बो में रागी (फिंगर मिलेट) की खेती के प्रमाण मौजूद हैं।

भारत के प्राचीन ग्रंथों जैसे अथर्ववेद, यजुर्वेद, चरक संहिता, अर्थशास्त्र और अभिज्ञान शाकुंतलम में भी मोटे अनाज का उल्लेख मिलता है। न केवल भारतीय ग्रंथों में, बल्कि विदेशी यात्रियों के आलेखों में भी इनका उल्लेख मिलता है। मोटे अनाज में ज्वार, बाजरा और रागी मुख्य रूप से शामिल हैं। ये फसलें विषम जलवायु में कम पानी से भी आसानी पनप जाती है। कटाई के बाद बाजरा किसानों के लिए विपणन व्यवस्था आज भी संतोषजनक नहीं है। किसान वे सरकारी तंत्र के माध्यम से खरीद को संस्थागत रूप देने के लिए जूझ रहे हैं, लेकिन सरकारें कोई सकारत्मक कदम नहीं उठाया गया है। राजस्थान में समर्थन मूल्य पर मिलेट्स की सरकारी खरीद लंबे समय से चला आ रहा अहम राजनीतिक मुद्दा है। मिलेट्स के महत्व को पहचानते हुए भारत सरकार के प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने प्रस्ताव पारित कर वर्ष 2023 को 'अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष' घोषित किया। मिलेट्स को फिर से अपनाकर, एक स्थायी एवं आत्मनिर्भर भविष्य सुरक्षित करने का अवसर मिला है। आज, जब दुनिया इन जलवायु-स्मार्ट फसलों के मूल्य को फिर से खोज रही है। भारत को अपनी मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था और खाद्य संस्कृति में एकीकृत करने की अगुवाई करनी चाहिए। अब समय आ गया है कि हम अपने मिलेट्स की विरासत को सिर्फ याद करने तक सीमित न रहें, बल्कि इसे पुनर्स्थापित करने के लिए ठोस कदम उठाएं। हर बाजरे की रोटी का निवाला या राबड़ी की चुस्की हमें राजस्थान की उस अटूट शक्ति की याद दिलाए, जो हमेशा अपनी जड़ों में मजबूती से खड़ी रही है। जिस सुनहरी रेत ने सदियों तक इन अनाजों को पोषित किया, वह अब एक स्वस्थ और आत्मनिर्भर कल की संभावना दिखा रही है। पूरे देश में इन अनाजों को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजना बनाने की जरूरत है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

स्वास्थ्यकर भोजन व सक्रिय जीवन को दें बढ़ावा

दिनेश सी. शर्मा

अपने हालिया 'मन की बात' प्रसारण में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती पर प्रकाश डाला—अधिक वजन या मोटापा। यह मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर जैसे गैर-संक्रामक रोगों का जोखिम बढ़ाने के मुख्य कारकों में से एक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मोटापे की चुनौती का समाधान खाद्य तेल की खपत को कम करने जैसे छोटे प्रयासों से किया जा सकता है। उन्होंने कहा, 'आपको यह निर्णय लेना चाहिए कि आप हर महीने 10 प्रतिशत कम तेल का उपयोग करेंगेज यह मोटापा कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।' उन्होंने आगे कहा कि भोजन में कम तेल-घी का उपयोग करना और मोटापे से निजात न केवल व्यक्तिगत चुनाव है, बल्कि परिवार के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी भी है।

प्रधानमंत्री ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक सार्वजनिक अभियान शुरू किया, जिसमें 10 सार्वजनिक हस्तियों को अपने भोजन में 10 प्रतिशत तेल कम करने की चुनौती दी और उनसे आगे अन्य 10 लोगों को इस चुनौती से जोड़ने का आग्रह किया। उन्होंने उम्मीद जताई कि इससे मोटापे से लड़ने में काफी मदद मिलेगी। एनसीडी और तेल की खपत के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री का यह सार्वजनिक स्वास्थ्य संदेश महत्वपूर्ण है, लेकिन यह पूरी कहानी का केवल एक हिस्सा भर है। दरअसल, बड़ी वजह है वसा का अत्यधिक सेवन, मुख्य रूप से ट्रांस फैटी एसिड या ट्रांस फैट, जो एनसीडी शृंखला का जोखिम बढ़ाने के बड़े कारकों में से एक है। ट्रांस फैट स्रोतों में डेयरी उत्पाद, घी, मांस और वनस्पति हैं। अन्य किस्म की वसा का अधिक सेवन भी हानिकारक है। राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा जारी आहार दिशानिर्देशों के अनुसार, नारियल तेल, घी और पामोलीन तेल में संतृप्त वसा का अनुपात सबसे अधिक है। प्रधानमंत्री द्वारा सुझाया गया विचार—खाना पकाते या उसकी सजावट करते समय उपयोग किए जाने वाले तेल की खपत को कम करना- केवल आधा कदम है।

हम प्रसंस्कृत भोजन पदार्थ, फास्ट फूड, तले स्नैक्स, कुकीज इत्यादि के जरिए ट्रांस फैट ग्रहण करते हैं। अन्य कारकों में, भोज्य पदार्थों में मौजूद संतृप्त और असंतृप्त वसा का स्रोत भी कम या ज्यादा मात्रा में होता है। जन स्वास्थ्य के हित में, न केवल

तेल बल्कि देसी एवं वनस्पति घी के साथ-साथ पैकेटबंद अति-प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ और डेयरी उत्पादों के सेवन में कटौती करना आवश्यक है। मोटापे के विरुद्ध अभियान में अस्वास्थ्यकारी आहार और आरामपरस्त जीवनशैली के त्याग को भी शामिल किया जाए। स्वेच्छा से खाद्य तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती करने के लिए कहकर, प्रधानमंत्री ने मोटापे और असंक्रामक महामारी से निपटने का जिम्मा लोगों पर डाल दिया है। यह दशकों से अर्जित उस जन स्वास्थ्य ज्ञान के विरुद्ध है, जो कहता है कि स्वस्थ आहार संबंधी आदतों को अपनाना व्यक्तिगत और सामाजिक, दोनों पक्षों की जिम्मेदारी है। सरकार नीतियों के जरिए वातावरण बनाए, जो लोगों को कम वसा वाले स्वस्थ आहार का सेवन करने में सक्षम और प्रोत्साहित करें। यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि जब सारा माहौल ही मोटापे को बढ़ावा देने वाला हो, जिसे वैज्ञानिक मोटापे को बढ़ावा देने वाला वातावरण कहते हैं- वहां कोई स्वस्थ आहार और स्वस्थ जीवनशैली कैसे अपना सकेगा। यह प्रयोजन सार्वजनिक नीतियों द्वारा आकार पाता है, वरना समुदायों को स्वस्थ विकल्प प्रदान नहीं करता। हमें व्यक्तिगत कार्यों के साथ-साथ मोटापा और एनसीडी से निपटने के लिए जनसंख्या-व्यापी और बहुक्षेत्रीय नीतिगत दृष्टिकोण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, भारत खाद्य तेल आपूर्ति के लिए आयात पर बहुत अधिक निर्भर है, और सार्वजनिक नीतियां पाम ऑयल के आयात को प्रोत्साहित करने वाली हैं।

कुल आयातित खाद्य तेलों में पाम ऑयल का हिस्सा लगभग 60 प्रतिशत है। पाम ऑयल प्रसंस्कृत खाद्य उद्योग का मनपसंद माध्यम है, हालांकि अनेक अध्ययनों ने इसके सेवन को हृदय रोग के बढ़ते जोखिम से जोड़ा है। खाद्य तेलों के उत्पादन और आयात को नियंत्रित करने वाली सार्वजनिक नीतियों को इस तरह से बनाया जाए कि वे लोगों को कम हानिकारक खाद्य तेलों का विकल्प प्रदान करें। पिछले कुछ दशकों में, भारत में बढ़ती आय, शहरीकरण और खाद्य उत्पादों के बढ़ते वैश्वीकरण के साथ खान-पान संबंधी आदतें बदल गई हैं, जिसके परिणामस्वरूप नमक, चीनी और वसा से भरपूर अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ लोकप्रिय हो गए हैं।

किम जोंग पर ट्रंप की चुप्पी के मायने

पुष्परंजन

क्या अमेरिका को उत्तर कोरिया के साथ बातचीत फिर से शुरू करनी चाहिए? ठीक एक माह पहले 7 फरवरी को जापानी प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा ने डोनाल्ड ट्रम्प को सुझाव दिया था, कि वो उत्तर कोरियाई तानाशाह किम जोंग उन से दोबारा बात करें। लेकिन, जेलेन्स्की से जो अनुभव ट्रम्प ने प्राप्त किया है, उस कड़वे अनुभव के आधार पर ट्रम्प कम से कम किम से तुरंत नहीं उलझेंगे। जेलेन्स्की, चाहे आने वाले दिनों में नरम पड़ जाएं, या खनिज समझौता कर लें, लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति की जिस तरह आमने-सामने हेकड़ी उतारी है, उससे उनका प्रभामंडल निस्तेज हुआ है। अटलांटिक से लेकर, एशिया-प्रशांत और मिडल ईस्ट तक कुछ शासन प्रमुखों का हौसला बुलंद हुआ है, कि व्हाइट हाउस से दबो नहीं। तुर्की-ब-तुर्की जवाब दो।

7 फरवरी, 2025 को जापानी प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने उत्तर कोरियाई तानाशाह किम जोंग उन के साथ अपने व्यक्तिगत संबंधों पर जोर देते हुए कहा, कि 'वह हम सबों के लिए बहुत बड़े धरोहर हैं। मैं उनसे मिलता रहता हूं।' इशिबा के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस में ट्रम्प ने यह भी दावा किया कि उनके पहले कार्यकाल के दौरान किम के साथ उनकी बातचीत ने कोरियाई प्रायद्वीप पर युद्ध को रोक दिया था। चाहे यह सच हो, या नहीं, ट्रम्प ने निश्चित रूप से अपने पूर्ववर्ती की तुलना में उत्तर कोरिया के साथ बेहतर व्यवहार किया। पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सुंदर भाषण दिए, लेकिन पूर्वी एशिया के कई देशों, जिनमें अमेरिकी सहयोगी और साझेदार भी शामिल हैं, के सामने वे कमजोर नजर आए। आठ साल तक उन्होंने उत्तर कोरिया के बारे में कुछ नहीं किया, बल्कि बराक ने इसे 'रणनीतिक धैर्य' की नीति कहा था। इसका फायदा उठाकर फ्योंगयांग ने अपने मिसाइल और परमाणु हथियार कार्यक्रमों को रफ्तार दे दी। ट्रम्प, किम जोंग उन से सीधा उलझने से बचते रहे। ट्रम्प ने किम से तीन बार मुलाकात की 2018 में सिंगापुर में, 2019 में हनोई में, और 2019 में ही उत्तर और दक्षिण कोरिया को अलग करने वाले विसैन्यीकृत क्षेत्र में। फोटोऑप तक सीमित ये बैठकें, इसलिए विफल रहीं क्योंकि वे खराब तरीके से तैयार की गई थीं। इसमें 'परमाणु निरस्त्रीकरण' का कोई ठोस लक्ष्य निर्धारित नहीं किया गया था।

उत्तर कोरिया अपने परमाणु हथियार, या मिसाइल कार्यक्रमों को वैसे भी नहीं छोड़ने वाला है। उत्तर कोरिया के हवाले से कुछ विशेषज्ञों का आकलन है कि ट्रंप अपने कूटनीतिक टूलबॉक्स से धूल झाड़ सकते हैं, और किम जोंग उन के साथ एक और शिखर सम्मेलन की कोशिश कर सकते हैं। पिछले महीने 'नई ह्वासोंग-19 अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल' के परीक्षण के बाद, उत्तर कोरिया ने पुष्टि की, कि देश की परमाणु शक्ति को मजबूत करने की नीति कभी नहीं बदलेगी। 2023 में, उत्तर कोरिया ने परमाणु शक्ति को मजबूत करने की अपनी नीति को सुदृढ़ करने के लिए अपने संविधान में संशोधन किया। उसने स्पष्ट कर दिया कि परमाणु संपन्न देश बनने की उसकी स्थिति 'अपरिवर्तनीय' बनी हुई है।

पिछले महीने, नौ वर्षों में पहली बार, दक्षिण कोरिया और अमेरिका के रक्षा प्रमुखों के बीच की सुरक्षा परामर्श बैठक के बाद जारी किए गए एक संयुक्त बयान में उत्तर कोरिया के परमाणु निरस्त्रीकरण को साझा लक्ष्य के रूप में छोड़ दिया गया। यह एक संभावित संकेत है, कि उत्तर कोरिया का परमाणु निरस्त्रीकरण अब वास्तविक रूप से प्राप्त करने योग्य नहीं है। यदि किम, ट्रंप के साथ बैठते हैं, तो वे उत्तर कोरिया को परमाणु संपन्न देश के रूप में अमेरिका द्वारा मान्यता दिए जाने पर बातचीत करने का प्रयास करेंगे, तथा 'परमाणु निरस्त्रीकरण' के बजाय 'परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए बाद में प्रदत रियायतें मांगेंगे, जो उनके पिछले शिखर सम्मेलनों के दौरान चर्चा में था। कोरिया विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए कन्वर्जेंस संस्थान के निदेशक नाम सुंग-वुक का कहना है, 'बदले में ट्रम्प इसकी गारंटी ले सकते हैं, कि अमेरिका की मुख्य भूमि तक पहुंचने में सक्षम उत्तर कोरियाई मिसाइलों का मुंह किम घुमा दें।' सवाल यह है, ट्रम्प किम से इतना डरते क्यों हैं? क्या उसका मुंहफट होना ट्रम्प को डराता है, या कि सैन्य दुस्साहस? उत्तर कोरिया, 2022 से रूस-यूक्रेनी युद्ध में शामिल है, जब उसने स्वघोषित डोनेट्स्क पीपुल्स रिपब्लिक और लुगांस्क पीपुल्स रिपब्लिक को मान्यता देकर रूस का समर्थन किया था।

उत्तर कोरिया ने रूस में अपने सैन्य कर्मियों को भेजा, जिन्होंने रूसी वर्दी में, और रूसी कमान के तहत रूस के लिए यूक्रेन के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उत्तर कोरिया का हथियार उद्योग लहलहा रहा है। नवंबर, 2024 के मध्य तक, यूक्रेन के साथ संघर्ष में रूसी सशस्त्र बलों को मजबूत करने के लिए 50 उत्तर कोरिया निर्मित एम-1989 कोकसन स्व-चालित हॉवित्जर, और लगभग 20 एम-1991 शॉर्ट-रेंज मिसाइल सिस्टम रूस को दिए गए थे। ट्रम्प अपने दूसरे कालखंड में तानाशाहों से उलझते-उलझते खुद भी डिक्टेटर की भूमिका में आते दिखने लगे हैं। उन्होंने जब यह कहा, कि 'डिक्टेटर' पुतिन नहीं, ज़ेलेन्स्की है, तब क्रेमलिन को अच्छा लगा था। ओवल ऑफिस में जो कुछ ट्रम्प-जेलेन्स्की के बीच हुआ, पुतिन उस दिन से सॉफ्ट हैं। लेकिन, क्या मालूम इस 'नूरा कुश्ती' की पटकथा पहले से लिखी गई हो? यह सब देखते हुए, किम जोंग उन में भी रणनीतिक बदलाव की जरूरत आन पड़ी है। चीन, ट्रम्प के टैरिफ युद्ध से निपटने के वास्ते किसी भी स्तर पर जाने के लिए ताल ठोक रहा है, ऐसे में किम जोंग उन जैसा तानाशाह, शी चीन फिंग को चाहिए ही।

प्रदोष काल में करना चाहिए होलिका दहन

फाल्गुन पूर्णिमा को प्रदोष काल में होलिका दहन करते हैं, उसके अगले दिन सुबह होली का त्योहार मनाया जाता है। होलिका दहन के समय भद्रा काल नहीं लगना चाहिए। दरअसल, ज्योतिष शास्त्र में भद्रा काल को अशुभ समय बताया गया है। कहा जाता है कि भद्रा काल में होलिका दहन करने से सुख समृद्धि में कमी आती है। इसके अलावा पूर्णिमा प्रदोष काल में होलिका दहन करना उत्तम माना जाता है। अगर प्रदोष काल में भद्र मुख लग जाए तो भद्रा मुख समाप्त होने के बाद होलिका दहन किया जाता है। इस बार होली का रंग 14 मार्च दिन शुक्रवार को होगा। इस साल होलिका दहन पर सुबह से लेकर देर रात तक भद्रा का साया है, जो करीब 13 घंटे तक रहेगी। ऐसे में होलिका दहन का मुहूर्त प्रदोष काल में प्राप्त नहीं होगा।

होलिका दहन का मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, फाल्गुन माह के पूर्णिमा तिथि 13 मार्च दिन गुरुवार को सुबह 10 बजकर 35 मिनट से शुरू होगी। जो 14 मार्च को दोपहर 12 बजकर 35 मिनट पर समाप्त होगी। होलिका दहन होली से एक दिन पहले यानी 13 मार्च 2025 को किया जाएगा। होलिका दहन का शुभ मुहूर्त 13 मार्च को रात 11 बजकर 26 मिनट से 14 मार्च की मध्यरात्रि 12 बजकर 48 मिनट तक रहेगा।

पूजन विधि

होलिका दहन से पहले होली पूजन का विशेष विधान है। इस दिन सभी कामों से निवृत्त होकर स्नान कर लें। इसके बाद होलिका पूजन वाले स्थान में जाए और पूर्व या उत्तर दिशा में मुख करके बैठ जाएं। इसके बाद पूजन में गाय के गोबर से होलिका और प्रहलाद की प्रतिमाएं बनाएं। इसके साथ ही रोली, अक्षत, फूल, कच्चा सूत, हल्दी, मूंग, मीठे बताशे, गुलाल, रंग, सात प्रकार के अनाज, गेंहू की बालियां, होली पर बनने वाले पकवान, कच्चा सूत, एक लोटा जल मिष्ठान आदि के साथ होलिका का पूजन किया जाता है। इसके साथ ही भगवान नरसिंह की पूजा भी करनी चाहिए। होलिका पूजा के बाद होली की परिक्रमा करनी चाहिए और होली में जौ या गेहूं की बाली, चना, मूंग, चावल, नारियल, गन्ना, बताशे आदि चीज़ें डालनी चाहिए।

पौराणिक कथा

होली मनाने के पीछे शास्त्रों में कई पौराणिक कथा दी गई है। लेकिन इन सबमें सबसे ज्यादा भक्त प्रहलाद और हिरण्यकश्यप की कहानी प्रचलित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, फाल्गुन मास की पूर्णिमा को बुराई पर अच्छाई की जीत को याद करते हुए होलिका दहन किया जाता है। कथा के अनुसार, असुर हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम भक्त था, लेकिन यह बात हिरण्यकश्यप को बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी। बालक प्रह्लाद को भगवान की भक्ति से विमुख करने का कार्य उसने अपनी बहन होलिका को सौंपा जिसके पास वरदान था कि अग्नि उसके शरीर को जला नहीं सकती।

भक्तराज प्रह्लाद को मारने के उद्देश्य से होलिका उन्हें अपनी गोद में लेकर अग्नि में प्रविष्ट हो गयी, लेकिन प्रह्लाद की भक्ति के प्रताप और भगवान की कृपा के फलस्वरूप खुद होलिका ही आग में जल गई। अग्नि में प्रह्लाद के शरीर को कोई नुकसान नहीं हुआ। इस प्रकार होली का यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है।

हर रंग का होता है खास महत्व

रंग का लोगों के जीवन में खास महत्व है। वहीं रंगों के साथ दुनिया में बेहद खूबसूरत लगती है। यह रंग हमारी आंखों को सुकून पहुंचाते हैं, तो वहीं जीवन में उमंग, प्यार और खूबसूरती को बढ़ाते हैं। लाल रंग को प्यार का प्रतीक माना जाता है। हालांकि होली में लाल रंग का गुलाल जोश और ऊर्जा को जाहिर करता है। प्रकृति की सुंदरता को बढ़ाने वाली हरियाली हरे रंग से आती है। होली के मौके पर आप हरा रंग अपनों से बड़ों को लगा सकते हैं। होली के मौके पर लोग नारंगी रंग का उपयोग भी करते हैं। नारंगी रंग खुशियों, मिलनसारिता और खुशहाली का प्रतीक होता है। आप अपने दोस्तों, करीबियों और परिजनों को लगा सकते हैं। पीले रंग का गुलाल बेहद खूबसूरत लगता है। पीला रंग सुंदरता, पूजा और सम्मान का प्रतीक है। लड़कियों के चेहरे पर पीला रंग काफी आकर्षक लगता है। इसलिए बहनों को, महिला दोस्तों को या घर की महिलाओं को पीले रंग का गुलाल लगा सकते हैं।

हंसना मना है

डॉक्टर- अब आप खतरे से बाहर है, फिर भी आप इतना क्यों डर रहे हो? मरीज- जिस ट्रक से मेरी दुर्घटना हुई थी, उसपे लिखा था, फिर मिलेंगे।

डॉक्टर- जब आपको पता था, छिपकली आपके नाक में जा रही है, तो आपने रोका क्यों नही? पेशंट- पहले कॉकरोच गया था, मैंने सोचा उसे पकड़ने जा रही होगी।

वाईफ- सुबह मेरे चेहरे पे पानी क्यों डाला? हसबैंड- तेरे बाप ने कहा था, मेरी बेटी फूल की तरह है इसे मुरझाने मत देना।

पप्पू से इंटरव्यू में पूछा गया- बताओ वो कौन सी औरत है जिसको पता होता है की उसका हसबैंड कहा हैं? पप्पू ने अपना खतरनाक दिमाग लगाया और बोला- विधवा औरत।

पापा- नालायक, तुमने अपनी मम्मी से ऊंची आवाज में बात क्यों की? बेटा- मुझे पता है पापा आपको जलन हो रही है क्योंकि आप ऐसा नहीं कर सकते।

कहानी — मूर्ख साधू और ठग

एक बार की बात है किसी गांव में एक साधु बाबा रहा करते थे। पूरे गांव में वह अकेले साधु थे, जिन्हें पूरे गांव से कुछ न कुछ दान में मिलता रहता था। दान के लालच में उन्होंने गांव में किसी दूसरे साधू को नहीं रहने दिया और अगर कोई आ जाता था, तो उन्हें किसी भी प्रकार से गांव से भगा देते थे। इस प्रकार उनके पास बहुत सारा धन इकट्ठा हो गया था। वहीं, एक ठग की नजर कई दिनों से साधु बाबा के धन पर थी। वह किसी भी प्रकार से उस धन को हड़पना चाहता था। उसने योजना बनाई और एक विद्यार्थी का रूप बनाकर साधु के पास पहुंच गया। उसने साधु से अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। पहले तो साधु ने मना किया, लेकिन फिर थोड़ी देर बाद मान गए और ठग को अपना शिष्य बना लिया। ठग साधु के साथ ही मंदिर में रहने लगा और साधु की सेवा के साथ-साथ मंदिर की देखभाल भी करने लगा। ठग की सेवा ने साधु को खुश कर दिया, लेकिन फिर भी वह ठग पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाया। एक दिन साधु को किसी दूसरे गांव से निमंत्रण आया और वह शिष्य के साथ जाने के लिए तैयार हो गया। साधु ने अपने धन को भी अपनी पोटली में बांध लिया। रास्ते में उन्हें एक नदी मिली। साधु ने सोचा कि क्यों न गांव में प्रवेश करने के पहले नदी में स्नान कर लिया जाए। साधु ने अपने धन को एक कंबल में छुपाकर रख दिया और ठग से उसकी देखभाल करने का बोलकर नदी की ओर चले गए। ठग की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसे जिस मौके की तलाश थी, वो मिल गया। जैसे ही साधु ने नदी में डुबकी लगाई ठग सारा सामान लेकर भाग खड़ा हुआ। जैसे ही साधु वापस आया, उसे न तो शिष्य मिला और न ही अपना सामान। साधु ने ये सब देखकर अपना सिर पकड़ लिया।

7 अंतर खोजें

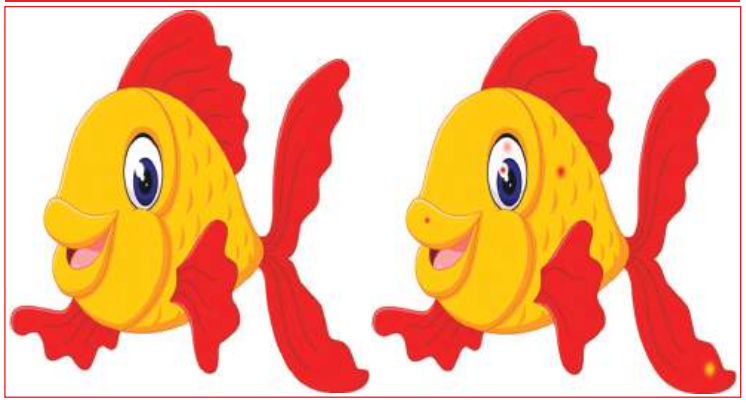

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। परीक्षा आदि में सफलता मिलेगी। पारिवारिक कष्ट एवं समस्याओं का अंत संभव है।

वृषभ — शत्रु सक्रिय रहेंगे। कुसंगति से हानि होगी। व्ययवृद्धि होगी। लेन-देन में सावधानी रखें, जोखिम न लें। किसी शुभचिंतक से मेल-मुलाकात का हर्ष होगा।

मिथुन — यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। डूबी हुई रकम प्राप्त होगी। आय में वृद्धि होगी। प्रमाद न करें। आकस्मिक लाभ व निकटजनों की प्रगति से मन में प्रसन्नता रहेगी।

कर्क — कार्यस्थल पर परिवर्तन लाभ में वृद्धि करेगा। योजना फलीभूत होगी। नए अनुबंध होंगे। कष्ट होगा। पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ने से व्यस्तता बढ़ेगी। कार्य में नवीनता के भी योग हैं।

सिंह — कानूनी अड़चन दूर होगी। अध्यात्म में रुचि रहेगी। यात्रा, नौकरी व निवेश मनोनुकूल रहेंगे। रुके धन के लिए प्रयत्न जरूर करें। कार्य का विस्तार होगा।

कन्या — चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें, बाकी सामान्य रहेगा। प्रयास अधिक करने पर भी उचित सफलता मिलने में संदेह है।

तुला — जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। राजकीय बाधा दूर होगी। बेचैनी रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। अर्थ प्राप्ति के योग बनेंगे। विवादों से दूर रहना चाहिए।

वृश्चिक — बेरोजगारी दूर होगी। विवाद न करें। संपत्ति की खरीद-फरोख्त हो सकती है। आय बढ़ेगी। मन में उत्साहपूर्ण विचारों के कारण समय सुखद व्यतीत होगा।

धनु — रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। किसी बड़े कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। प्रसन्नता बनी रहेगी। नए कार्यों से जुड़ने का योग बनेगा। पूजा-पाठ में मन लगेगा।

मकर — बुरी खबर मिल सकती है। विवाद को बढ़ावा न दें। भागदौड़ रहेगी। आय में कमी होगी। किसी कार्य में प्रतिस्पर्धात्मक तरीके से जुड़ने की प्रवृत्ति आपके लिए शुभ रहेगी।

कुम्भ — मेहनत का फल पूरा-पूरा मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। लाभ होगा। दूर रहने वाले व्यक्तियों से संपर्क के कारण लाभ हो सकता है।

मीन — आज उत्साहवर्धक सूचना मिलेगी। घर में प्रसन्नता रहेगी। परिवार में मेहमानों का आगमन होगा। व्यय होगा। अपने प्रयासों से उन्नति पथ प्रशस्त करेंगे।

जेलर-2 की शूटिंग शुरू, फिर अपने किरदार में नजर आयेंगे रजनीकांत

सुपरस्टार रजनीकांत की बहुप्रतीक्षित फिल्म जेलर 2 की शूटिंग चेन्नई में 10 मार्च से शुरू हो गई है। फिल्म के निर्माता सन पिक्चर्स ने सोशल मीडिया के जरिए इसकी घोषणा की। उन्होंने लिखा, मुथुवेल पांडियन का शिकार शुरू। जेलर 2 की शूटिंग आज से शुरू। इस फिल्म में रजनीकांत एक बार फिर अपने दमदार किरदार में नजर आएंगे।

तमिल सुपरहिट फिल्म जेलर का दूसरा भाग है। पहली फिल्म की तरह इसे भी नेल्सन दिलीपकुमार ने लिखा है और इसका निर्देशन भी कर रहे हैं। रजनीकांत के साथ यह उनकी दूसरी फिल्म है। जेलर एक एक्शन थ्रिलर थी, जिसने दर्शकों का खूब प्यार बटोरा था। इस बार भी फैंस को उम्मीद है कि यह फिल्म भी धमाल मचाएगी। फिल्म का संगीत अनिरुद्ध रविचंदर तैयार कर रहे हैं, जिन्होंने पहली फिल्म के गाने बनाए थे। ये गाने काफी ज्यादा हिट हुए थे। खबरों के मुताबिक जेलर 2 में कई बड़े सितारे नजर आएंगे। अलग-अलग फिल्म इंडस्ट्रीज के सितारों के कैमियो भी होंगे।

इससे पहले जनवरी 2025 में रिलीज हुए चार मिनट के प्रोमो ने सोशल मीडिया पर तहलका मचा दिया था। इसमें रजनीकांत के किरदार टाइगर मुथुवेल पांडियन की वापसी और एक्शन से भरे सीन दिखे थे।

पिछले साल नेल्सन दिलीपकुमार ने सोशल मीडिया पर जेलर 2 की घोषणा की थी। उन्होंने लिखा था, सुपरस्टार रजनीकांत, सन पिक्चर्स और अनिरुद्ध के साथ अपनी अगली फिल्म जेलर 2 की घोषणा करते हुए बहुत खुशी हो रही है। इस पोस्ट में उन्होंने अपनी टीम को धन्यवाद देते हुए रजनीकांत के प्रति अपनी कृतज्ञता भी जताई थी।

जेलर में राम्या कृष्णन, विनायक, योगी बाबू, वसंत रवि, तमन्ना भाटिया, रेडिन किंग्सले और सुनील जैसे सितारे थे। इसके अलावा मोहनलाल, शिव राजकुमार और जैकी श्रॉफ जैसे दिग्गजों ने इस फिल्म में कैमियो किया था। जेलर 2 में भी ऐसी ही शानदार कास्ट की उम्मीद की जा रही है।

कुछ लोग आरोप लगाकर मुझे इंडस्ट्री से निकालना चाहते थे : गोविंदा

गोविंदा पिछले लंबे वक्त से बड़े पर्दे से गायब हैं। हाल ही में उनकी कोई फिल्म रिलीज नहीं हुई है। इस दौरान गोविंदा सिर्फ रियलटी शोज में ही नजर आए हैं। एक हालिया बातचीत में गोविंदा ने इंडस्ट्री के अपने अनुभवों के बारे में बताया। इस दौरान अभिनेता ने कहा कि इंडस्ट्री में कई लोगों ने उनकी इमेज को जानबूझकर खराब करने का काम किया और उन्हें इंडस्ट्री से बाहर करना चाहते थे।

एक यूट्यूब चैनल के साथ बातचीत में 'पार्टनर' फिल्म के अभिनेता ने उनको लेकर चलाई जाने वाली खबरों के बारे में बात करते हुए कहा, जब वे लिख रहे थे कि मेरे पास काम नहीं है, तो मैंने 100 करोड़ रुपये की फिल्म छोड़ दी थी। हालांकि, बाद में मैं खुद को आईने में देख रहा था और थप्पड़ मार रहा था कि क्यों मैंने ये फिल्म छोड़ी। मैंने खुद से कहा,

'तुम पागल हो गए हो, उस पैसे से तुम अपनी जिंदगी चला सकते थे।' फिल्म में वही भूमिका थी जो इन दिनों चल रही है। हालांकि, खुद के साथ ईमानदार होना और अपनी अंतरआत्मा की बात सुनना बहुत जरूरी है।

बातचीत के दौरान अभिनेता ने पिछले दिनों को याद करते हुए कहा, उस वक्त जानबूझकर मेरी बदनामी की गई, मेरी छवि को खराब करने का प्रयास किया गया। वे मुझे फिल्म इंडस्ट्री से हटाना चाहते थे। मैं समझ गया था कि मैं एक अशिक्षित व्यक्ति हूं और पढ़े-लिखे लोगों के बीच आ गया हूं और वे मुझे हटाना चाहते थे। मैं उनका नाम खराब नहीं कर सकता, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वे किस हद तक जाएंगे। मेरे खिलाफ साजिशें शुरू हो गईं, लोग मेरे घर के बाहर बंदूकों के साथ पकड़े गए। इन सभी साजिशों के बाद मेरा स्वभाव बदल गया।

अगर वर्कफ्रंट की बात करें तो गोविंदा अंतिम बार 2019 में आई फिल्म 'रंगीला राजा' में नजर आए थे। इसके बाद से वो बड़े पर्दे से गायब हैं। हालांकि, इस दौरान गोविंदा कभी पैर में गोली लगने तो कभी पत्नी सुनीता के साथ अपने तलाक की खबरों को लेकर चर्चाओं में जरूर बने रहे।

बॉलीवुड | **मन की बात**

ट्रोलर्स के लिए महिलाएं ट्रोलिंग का आसान निशाना होती हैं : राम्या

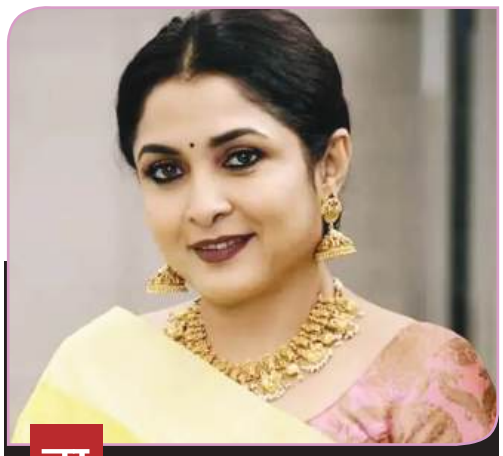

राम्या कृष्णन ने एक कार्यक्रम के दौरान अपने अनुभवों को साझा किया। इसमें एक्ट्रेस अपनी मानसिक स्थितियों का जिक्र करते हुए भावुक हो गई। उन्होंने कहा कि लोगों को समझना चाहिए कि महिलाएं किन परिस्थितियों से गुजर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव के दौरान अपने मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करते हुए भावुक हो गई। उन्होंने कहा कि 2013 में अपने पिता आर.टी. नारायण के निधन के बाद वह पूरी तरह टूट चुकी थी। इस दुख को वह सहन नहीं कर पा रही थी। इससे निपटने के लिए उन्होंने बहुत प्रयास किए। एक्ट्रेस ने कहा कि विपश्यना योग के जरिए उनको मानसिक स्वास्थ्य से निपटने में सहायता मिली। अभिनेत्री ने अपनी तुलना बॉलीवुड की दिग्गज एक्ट्रेस दीपिका पादुकोण से की, क्योंकि वह भी अपने मानसिक स्वास्थ्य को लेकर हमेशा से मुखर रही हैं। आजकल सोशल मीडिया पर नेटिजंस द्वारा कलाकारों को किसी भी बात पर ट्रोलिंग किए जाने की खबर आए दिन सुनाई देती रहती है। इसपर एक्ट्रेस राम्या ने अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि ट्रोलिंग से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। साथ ही कहा कि उनके लिए महिलाएं ट्रोलिंग का आसान निशाना होती हैं। उन्हें समझना चाहिए कि महिलाएं किस स्थिति से गुजरती हैं। अगर कन्नड़ अभिनेत्री राम्या कृष्णन के वर्कफ्रंट की बात करें तो उन्हें बाहुबली फिल्म में शिवगामी देवी के रोल के लिए जाना जाता है। उनकी आखिरी फिल्म 'हॉस्टल हुडुगारू बेकागिद्दरे' थी, जिसमें उन्होंने कैमियो किया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, राम्या की अगली फिल्म 'उत्तराखंड' होने वाली है।

पाताल लोक में बना है यह होटल, एक दिन का किराया सुन उड़ जायेंगे होश

हमारे पौराणिक कथाओं में पाताल लोक के बारे में कई बातें कही गई हैं। ऐसा कहा जाता है कि इंसान धरती पर रहते हैं, तो ईश्वर आसमान में बसे स्वर्ग लोक में रहते हैं। लेकिन राक्षसों का बसेरा जमीन की गहराई में पाताल लोक है। लेकिन इंसानों ने न तो स्वर्ग लोक देखा है और ना ही पाताल लोक। ऐसे में हम सिर्फ कयास लगा सकते हैं कि वो कैसा होगापं। लेकिन कुछ लोगों को वैसी चीजों को बनाने में मजा आता है।। आलीशान इमारतें जो आसमान छूती हैं, तो जमीन के अंदर भी निर्माण होने लगे है। आज हम आपको एक ऐसे ही होटल के बारे में बताने जा रहे हैं, जो जमीन की गहराई में बना है। वो भी इतनी गहराई में कि आपको पाताल लोक सा अहसास होगा। इसे देखकर अचरज भी होगा। लेकिन यहां पर रुकने के बदले में आपको बहुत सारे पैसे खर्च करने पड़ेंगे। लेकिन उससे पहले आपको होटल के बारे में बतलाते हैं। इसका नाम 'डीप स्लीप' होटल है, जिसे दुनिया का सबसे गहरा होटल माना जाता है। वेल्स में स्नोडोनिया की पहाड़ियों के नीचे 1375 फीट (419 मीटर) की गहराई पर एक खाली खदान में यह होटल बना है। चार प्राइवेट ट्विन-बेड केबिन और एक डबल बेड, एक डाइनिंग एरिया और शौचालय की सुविधाओं से लैस ग्रोटो रूम युक्त डीप स्लीप एक ऐसा होटल है, जो किसी भी अन्य होटल से अलग है। खाली पड़े क्रमोर्थिन स्लेट खदान के एक हिस्से में यह बना है, जिसका दुनिया के सबसे गहरे होटल के रूप में प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। अगर आपको लगता है कि यह ऐसी जगह है, जहां आप वास्तव में रात बिताना चाहेंगे, तो जान लें कि आपको न केवल प्रति रात लगभग 62 हजार (688) तक का भुगतान करना होगा, बल्कि वहां पहुंचने के लिए पुरानी खदानों के शाफ्ट के माध्यम से एक 'खड़ी और चुनौतीपूर्ण' मार्ग से गुजरना होगा। आपको जानकर हैरानी होगी कि यह होटल मात्र एक दिन शनिवार को ही खुलता है। यानी शनिवार की रात वहां गुजारेंगे और रविवार को आपको घर भेज दिया जाएगा। दो साल पहले अप्रैल 2023 में ये होटल खुला था, जिसका उद्घाटन आउटडोर एक्टिविटी कंपनी गो बिलो द्वारा किया गया था। यहां रुकने वालों को ऑनलाइन रिजर्वेशन कराना पड़ता है। इसके बाद शनिवार की शाम को ब्लेनाउ फेस्टिनियोग शहर के पास से गो बिलो बेस की यात्रा करके गेस्ट अपने रोमांच की शुरुआत करते हैं। इसी जगह पर प्रशिक्षित गाइड गेस्ट भूमिगत होटल तक ले जाने के लिए इंतजार करते हैं। पहाड़ों के बीच से 45 मिनट की चढ़ाई करने के बाद गेस्ट एक छोटे से कॉटेज में तैयार होते हैं। फिर खाली पड़े क्रमोर्थिन खदान में उतरने की तैयारी करते हैं, जो दुनिया की सबसे बड़ी खाली स्लेट खदान है. यहां से चुनौतीपूर्ण रास्तों से होते हुए होटल तक पहुंचने में लगभग एक घंटा लगता है।

अजब-गजब | **इस जेल की है अनोखी कामयाबी**

किराये के दो कमरों से हुई थी इस जेल की शुरुआत, तब थे मात्र 40 अपराधी

अलीगढ़। जेल कहीं की भी हो सबसे अप्रिय जगह मानी जाती है। अपराधियों को खुले में भी नहीं छोड़ा जा सकता है, इसलिए जेल एक जरूरत भी है। दुनिया के साथ जेलों का इतिहास भी गुथा है। कई जेलें काफी पुरानी हैं। यूपी के अलीगढ़ जेल का इतिहास तो करीब 220 साल पहले का है। यहां सर्वप्रथम 1804 में कोल तहसील में किराये के दो कमरे लेकर जेल बनाई गई थी। उस समय जिले में करीब 40 अपराधी थे, जिन्हें यहां रखा जाना था। 2 कमरों की जगह 40 अपराधियों के लिए नाकाफी थी। हालांकि अंग्रेजों ने सैनिकों को पहरे पर लगाया था, लेकिन इन अपराधियों में कई आंखों में धूल झोंकर भागने में सफल रहे थे। लिहाजा अंग्रेजों ने एक जेल बनवाने का फैसला किया।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इतिहासकार एमके पुंडीर कहते हैं कि अलीगढ़ जिले की पहली आपराधिक जेल का निर्माण 1810 में पूरा हुआ। इसकी लागत 34,000 रुपये आई थी। सिविल जेल और जेल अस्पताल 1816 में निर्मित किए गए। 1817 में जेल से फौजी पहरेदारी हटा दी गई। इनकी जगह पर आगरा प्रांतीय बटालियन के जवान पहरे पर लगाए गए। ये व्यवस्था 1831 तक

चलती रहे। इसके बाद विशेष जेल सुरक्षा गारद की स्थापना की गई, जिसने आगरा प्रांतीय बटालियन की जगह ली।

इतिहासकार एमके पुंडीर के अनुसार, आज की जेलों में दिनोंदिन कैदियों की संख्या बढ़ती जा रही है। मौजूदा समय में 1200 कैदियों की क्षमता वाली अलीगढ़ जेल में 2500 से ज्यादा कैदी हैं। जबकि अंग्रेजी शासन में कैदियों की संख्या कम होती गई। 1845-1849 के दौरान अलीगढ़ की जिला जेल में कैदियों की औसत संख्या 648 थी। इसके 50 साल बाद 1895-1899 के दौरान कैदियों की औसत संख्या घटकर 420 रह गई। उस समय भी कैदियों को हुनरमंद बनाने का काम किया जाता था जेल में रहने के दौरान उन्हें रस्सी की बटाई, कालीन बुनाई और ईंट पथाई का काम सिखाया जाता था। वरिष्ठ जेल अधीक्षक कहते हैं कि दस्तावेज के अनुसार अलीगढ़ कारागार 1810-11 में स्थापित किया गया।

बकवास मत कीजिए, कोई ऑफर नहीं दिया जा रहा : तेजस्वी यादव

महागठबंधन में नीतीश की वापसी के सवाल पर भड़के नेता प्रतिपक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विपक्षी महागठबंधन में फिर से शामिल होने की किसी भी संभावना को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि उनके लिए कोई प्रस्ताव नहीं था और गठबंधन अब केवल आगामी विधानसभा चुनावों पर केंद्रित है। बिहार में ओबीसी, ईबीसी, दलितों और आदिवासियों के लिए 65 प्रतिशत आरक्षण लागू न किए जाने के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे यादव ने उस समय अपना आपा खो दिया जब उनसे पूछा गया कि क्या नीतीश का फिर से स्वागत किया जाएगा। तेजस्वी ने भड़कते हुए पूछा कि आपको ये विचार कौन देता है? हम उनका स्वागत क्यों करेंगे? कोई प्रस्ताव नहीं है, बकवास मत कीजिए।

लालू जी और मेरे अलावा कोई भी प्रस्ताव देने के लिए अधिकृत नहीं है, और कोई प्रस्ताव नहीं दिया जाएगा। जेडीयू और आरजेडी के बीच पर्दे के पीछे की सांठगांठ की अफवाहें कुमार के राजनीतिक गलियारे में उतार-चढ़ाव के इतिहास की पृष्ठभूमि में चल रही हैं। कभी आरजेडी संस्थापक लालू यादव के कट्टर राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी रहे कुमार ने 2015 के राज्य चुनावों में आरजेडी के साथ गठबंधन किया और गठबंधन ने शानदार जीत हासिल की। चुनाव के दो साल बाद, कुमार गठबंधन से बाहर हो गए और मुख्यमंत्री के रूप में वापस आने के लिए भाजपा से हाथ मिला लिया। जेडीयू और बीजेपी ने 2020 के चुनाव गठबंधन में लड़े, लेकिन कुमार ने दो साल बाद फिर से पलटी मारी और विपक्षी खेमे में लौट आए। 2024 में, लोकसभा चुनावों से पहले, जेडीयू प्रमुख ने अपना नवीनतम बदलाव किया और एनडीए में वापस आ गए। नौवीं बार शपथ लेने पर भाजपा ने उनका समर्थन किया। पिछले कुछ दिनों में कुमार और यादव के बीच तीखी नोकझोंक देखी गयी है।

राजद के आचरण की वजह से समझौते से हुए अलग: संजय

राजद नेता तेजस्वी यादव के बयान पर जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा ने जवाब दिया है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने राज्य सरकार में उस पार्टी (राजद) के आचरण को देखते हुए समझौते को खारिज कर दिया। आपने लोकसभा चुनाव, उपचुनावों के परिणाम देखे और यह बहुत स्पष्ट है कि 2025 (बिहार विधानसभा चुनाव) में क्या होने वाला है। उस गठबंधन के अलावा कोई विकल्प नहीं है। चिराग पासवान ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री मोदी और राज्य स्तर पर नीतीश कुमार के नेतृत्व में डबल इंजन की सरकार चल रही है। आज जनता को विश्वास है कि यही वह गठबंधन है जो बिहार को विकसित राज्य बना सकता है।

जनता लालू-नीतीश दोनों से परेशान, बदलाव तय : पीके

दरभंगा। प्रशांत किशोर ने कहा कि हम दो साल से गांव-गांव घूम रहे हैं। हर गांव में यही सुनने को मिलता है कि जनता लालू और नीतीश दोनों से त्रस्त हो चुकी है। उन्होंने कहा कि लालू यादव के शासनकाल में अपराधियों की सत्ता थी, आज नीतीश कुमार के शासन में अधिकारी बेलगाम हो गए हैं। दोनों ही कालखंड में जनता की हालत बदतर रही है। उन्होंने दावा किया कि बिहार की जनता अब बदलाव के लिए तैयार है। उन्होंने यह भी कहा कि नीतीश कुमार अब किसी भी हालत में दोबारा मुख्यमंत्री नहीं बन पाएंगे, क्योंकि जनता अब उनके राज से पूरी तरह ऊब चुकी है। जनसुराज अभियान के संयोजक प्रशांत किशोर ने एक बार फिर नीतीश कुमार की सरकार पर बड़ा हमला बोला है। दरभंगा के दौरे पर पहुंचे प्रशांत किशोर का कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। इस मौके पर उन्होंने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में लालू यादव और नीतीश कुमार के शासन में कोई फर्क नहीं है। दोनों ही शासनकाल में आम जनता का शोषण हुआ है, बस किरदार बदल गए हैं। प्रशांत किशोर ने तंज कसा कि लालू राज में अपराधी रात को बंदूक सटाकर लोगों को लूटते थे, अब नीतीश राज में अधिकारी दिन में कलम और गन दोनों से लूट रहे हैं। उन्होंने कहा कि जो अपराध पहले अपराधी करते थे, अब वही कार्य प्रशासन के लोग कर रहे हैं। उन्होंने अधिकारियों पर भ्रष्टाचार और मनमानी का आरोप लगाते हुए कहा कि आज बिहार में अधिकारियों का जंगलराज कायम है। जनसुराज के संयोजक प्रशांत किशोर ने राजद नेता तेजस्वी यादव पर हमला करते हुए कहा कि वह मुस्लिमों को डरा धमका कर वोट लिया करते हैं। जिस दिन राजद के हाथ से मुस्लिमों का वोट निकल जाएगा उस राजद का वजूद समाप्त हो जाएगा। पीके ने डोमिसाइल नीति को लागू करने पर कहा कि जब वह सरकार में हुआ करते थे, तब क्यों नहीं डोमिसाइल नीति लागू की थी।

नौकरी के बदले जमीन घोटाले में तेज प्रताप को दिल्ली की कोर्ट से जमानत

» हेमा यादव को भी राहत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। नौकरी के बदले जमीन घोटाले मामले में राजद नेता और लालू यादव के बेटे तेज प्रताप को बड़ी राहत मिली है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट में पेशी के लिए पहुंचे तेज प्रताप यादव को जमानत मिल गई है। उनके अलावा हेमा यादव और अन्य आरोपियों को भी जमानत दी गई है। कोर्ट ने आरोपियों को 50 हजार रुपये मुचलके और इतनी ही राशि के एक सिक्योरिटी बॉन्ड के साथ राहत दी है। इससे पहले कोर्ट ने पिछले महीने पूर्व केंद्रीय रेल मंत्री लालू प्रसाद को जमीन के बदले नौकरी घोटाले मामले में तलब किया था। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने लालू प्रसाद के बेटे और बिहार के पूर्व मंत्री तेज प्रताप यादव और बेटी हेमा यादव को भी तलब किया था।

न्यायाधीश ने तेजस्वी यादव को भी नए समन जारी किए थे। आरोपियों को 11 मार्च को अदालत में पेश होने का निर्देश दिया गया था। भ्रष्टाचार के इस मामले में सीबीआई ने 78 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। यह मामला मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्थित भारतीय रेलवे के पश्चिम मध्य मंडल में की गई समूह 'डी' नियुक्तियों से संबंधित है।

अपनी जुबान पर काबू रखें शिक्षा मंत्री : स्टालिन

» धर्मेंद्र प्रधान पर भड़के तमिलनाडु के सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर पलटवार किया है। धर्मेंद्र प्रधान ने लोकसभा की कार्यवाही के दौरान राज्य सरकार को पीएम स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम एसएचआरआई) योजना को लागू करने के मुद्दे पर बेईमान और छात्रों का भविष्य बर्बाद करने वाला करार दिया था। एमके स्टालिन ने एक्स पर तमिल में कड़े शब्दों में लिखे एक पोस्ट में धर्मेंद्र प्रधान के अहंकार की निंदा की और कहा कि वह एक घमंडी राजा की तरह बोल रहे हैं और जिसने तमिलनाडु के लोगों का अनादर किया है, उन्हें अनुशासित किए जाने की आवश्यकता है। एमके स्टालिन ने एक्स पर लिखा, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, जो खुद को राजा समझते हैं, अहंकार से बोलते हैं, उन्हें अपनी जुबान पर नियंत्रण रखना चाहिए।

धर्मेंद्र प्रधान की टिप्पणी पर डीएमके सदस्यों के विरोध के बाद सोमवार को लोकसभा की कार्यवाही लगभग 30 मिनट के लिए स्थगित कर दी गई। पीएम श्री योजना पर एक प्रश्न का उत्तर देते हुए प्रधान ने कहा कि डीएमके के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार ने केंद्र प्रायोजित योजना के कार्यान्वयन पर अपना रुख बदल दिया है, जिसमें केंद्र, राज्य या स्थानीय निकायों द्वारा प्रबंधित स्कूलों को मजबूत बनाने की परिकल्पना की गई थी।

सांसद कनिमोझी ने धर्मेंद्र प्रधान के खिलाफ भेजा विशेषाधिकार हनन का नोटिस

डीएमके सांसद कनिमोझी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मुद्दे पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की टिप्पणी के जवाब में उनके खिलाफ संसदीय विशेषाधिकार हनन का नोटिस दायर किया। यह नोटिस एनईपी के तहत प्रस्तावित त्रि-भाषा फार्मूले पर चल रही बहस के बीच आया है, जिसने केंद्र और तमिलनाडु सरकार के बीच तीव्र विवाद को जन्म दिया है। नोटिस दाखिल करने से पहले कनिमोझी ने कहा कि डीएमके सरकार ने एनईपी पर चिंता जताई है और नीति को पूरी तरह से स्वीकार करने से इनकार कर दिया है। केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कनिमोझी ने कहा कि उन्हें स्कूली शिक्षा के लिए फंड को एनईपी कार्यान्वयन से नहीं जोड़ना चाहिए। हमने अपना रुख नहीं बदला है। मंत्री ने हमें झूठा और असभ्य कहा। उन्होंने हमारे स्वाभिमान को ठेस पहुंचाई। हम किसी भाषा के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन आप हमें असभ्य नहीं कह सकते। इससे पहले, तमिलनाडु में एनईपी के कार्यान्वयन को लेकर उठे विवाद के बीच प्रधान की टिप्पणी की कई विपक्षी सदस्यों द्वारा निंदा किए जाने के बाद लोकसभा को कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया गया था।

खिताबी जीत के बाद स्वदेश लौटी भारतीय टीम

» रोहित-हार्दिक-श्रेयस मुंबई तो जडेजा-वरुण पहुंचे चेन्नई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चैंपियंस ट्रॉफी में खिताबी जीत के बाद भारतीय खिलाड़ी स्वदेश लौट गए हैं। टी20 विश्व कप में जीतने के बाद टीम एक साथ भारत लौटी थी, लेकिन इस बार टीम के सदस्य अलग-अलग शहरों में उतरे हैं। कप्तान रोहित शर्मा, ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या और श्रेयस अय्यर मुंबई एयरपोर्ट पर नजर आए, जबकि रवींद्र जडेजा और वरुण चक्रवर्ती चेन्नई में उतरे। ऐसे ही मुख्य कोच गौतम गंभीर दुबई से दिल्ली पहुंचे। भारतीय टीम के एक अन्य ऑलराउंडर अक्षर पटेल अहमदाबाद एयरपोर्ट पर उतरे।

देश के अलग-अलग शहरों में जहां यह चैंपियंस खिलाड़ी खिताब जीतने के बाद उतरे वहां प्रशंसकों की भारी भीड़ ने उनका स्वागत किया। रवींद्र जडेजा की पत्नी रिवाबा ने भारतीय टीम की खिताबी जीत के बाद कहा, यह भारत के लोगों की प्रार्थना और दुआओं के कारण संभव हो सका है। भारतीय टीम जिस तरह से खेली, हम पूरे टूर्नामेंट के दौरान अजेय रहे। सभी खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया। मुझे यकीन है कि टीम भविष्य में भी इस तरह का प्रदर्शन जारी रखेगी। बता दें कि भारत ने दुबई में खेले गए फाइनल मुकाबले में न्यूजीलैंड को चार विकेट से हराया और 12 साल बाद चैंपियंस ट्रॉफी का खिताब अपने नाम किया था।

कप्तान के तौर पर जीत प्रतिशत में सबसे आगे हैं रोहित शर्मा

नई दिल्ली। भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा देश के सबसे सफल कप्तान में से एक हैं। भारत ने उनके नेतृत्व में पिछले कुछ समय से शानदार प्रदर्शन किया है और आठ महीने के भीतर दूसरा आईसीसी खिताब जीतने में सफल रहा है। रोहित की कप्तानी में भारतीय टीम ने अजेय रहते हुए पिछले साल टी20 विश्व कप जीता था और अब चैंपियंस ट्रॉफी में भी टीम ने लगातार पांच जीत दर्ज कर खिताब अपने नाम किया। कप्तान के तौर पर रोहित ने 142 मैचों में भारत की कप्तानी की है जिसमें से टीम 105 मैच जीतने में सफल रही है, जबकि 33 मैच में उसे हार मिली है। इस दौरान रोहित का जीत का प्रतिशत 73.94 प्रतिशत रहा है जो किसी भी कप्तान की तुलना में सर्वश्रेष्ठ है। रोहित के बाद रिकी पोंटिंग का नंबर आता है जिन्होंने 324 मैचों में ऑस्ट्रेलिया की कमान संभाली जिसमें टीम ने 220 मैचों में जीत दर्ज की, जबकि 77 मुकाबले गंवाए। पोंटिंग का अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कप्तान के तौर पर जीत का प्रतिशत 67.90 है।

बीजेपी मुझे डराने की कोशिश कर रही है : बघेल

मुझे चुनाव न हारने का डर है और न मरने का

» बोले- सवाल पूछने की वजह से हुई छापेमारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रायपुर। छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल और उनके बेटे चैतन्य के घर पर प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने दबिश दी। ईडी के अधिकारी सुबह से दस्तावेज खंगाल रहे थे। कार्रवाई के बीच नोट गिनने और सोना जांचने की मशीनें भी मंगाई गई है। 11 घंटे की पूछताछ खत्म होने के बाद भूपेश बघेल ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि बीजेपी उनको डराने की कोशिश कर रही है। पूर्व सीएम ने आगे कहा कि भूपेश बघेल मौत से भी नहीं डरते। मुझे ना हारने का डर है ना मरने का। भूपेश बघेल ने कहा कि उनके परिसरों पर ईडी की छापेमारी भाजपा की हताशा का नतीजा है। बघेल ने दावा किया कि ईडी को उनके घर में 32-33 लाख रुपये नकद मिले हैं।

कांग्रेस नेता ने आगे कहा कि 33 लाख रुपये मिलना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि मेरा परिवार बड़ा है और हम 140 एकड़ में खेती करते हैं और आय के तमाम साधन हैं। बघेल ने दावा किया कि ईडी को भाजपा नेताओं से संबंधित मामलों के दस्तावेजों के अलावा कुछ नहीं मिला है। पूर्व सीएम ने कहा कि पंजाब कांग्रेस का प्रभारी बनाए जाने के बाद उनको परेशान और निराश करना छापे का मकसद है। बता दें कि प्रवर्तन निदेशालय ने कथित शराब घोटाला मामले में उनके बेटे चैतन्य बघेल के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग जांच के तहत दुर्ग जिले के भिलाई शहर में बघेल के परिसरों पर छापेमारी की। चैतन्य के करीबी सहयोगी लक्ष्मी नारायण बंसल उर्फ पप्पू बंसल और कुछ अन्य लोगों के ठिकानों पर भी छापेमारी की गई है।

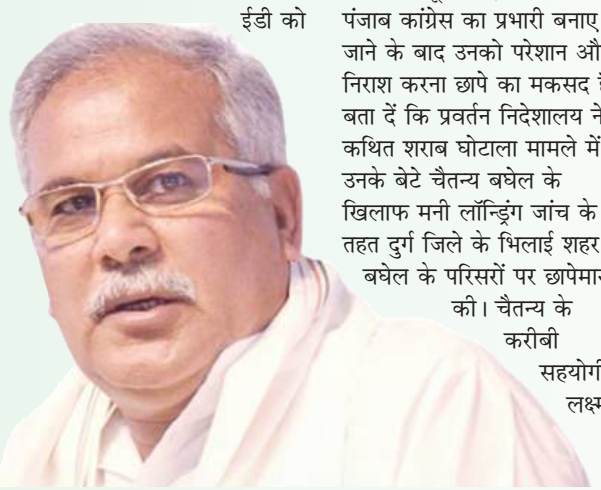

पूर्व सीएम बोले- ईडी के पास कोई तलाशी वारंट नहीं था

बघेल ने कहा कि ईडी के पास कोई प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट (ईसीआईआर) संख्या नहीं है। जब हमने इसके लिए पूछा तो उनके पास कोई जवाब नहीं था। सात साल पहले मेरे खिलाफ एक गंभीर आरोप लगाया गया था। उस मामले में कुछ नहीं मिला क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने मुझे बरी कर दिया। इस मामले में भी उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। बघेल ने आरोप लगाया कि उन्हें न तो विस में जाने दिया गया और न ही फोन इस्तेमाल करने दिया गया। मेरी बेटी, मेरा बेटा, बहू और पोते-पोतियां यहीं रहते हैं। हम मुख्य रूप से 140 एकड़ जमीन पर खेती करके कमाते हैं। इससे पहले आज, केंद्रीय जांच एजेंसी ने कथित शराब घोटाले के सिलसिले में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में 14 स्थानों पर छापेमारी की।

छापेमारी सरकार का ध्यान भटकाने वाली रणनीति : वेणुगोपाल

कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में दावा किया कि यह छापेमारी संसद में प्रमुख मुद्दों पर जवाब से बचने के लिए सरकार द्वारा ध्यान भटकाने वाली रणनीति है। जब भी संसद सत्र चल रहा होता है, तो लोगों के ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की जानी चाहिए, लेकिन वे इन मुद्दों से भागना चाहते हैं... सरकार जन केंद्रित मुद्दों पर चर्चा नहीं करना चाहती है।

'आरएसएस के खिलाफ न बोलें, हिंदू नाराज हो जाएंगे'

» राहुल गांधी के बयान के बाद दिग्विजय सिंह का खुलासा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के एक बयान पर लगातार चर्चा हो रही है। इन सबके बीच कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने कहा कि उन्हें गुजरात में चुनाव प्रचार के दौरान आरएसएस के खिलाफ बोलने से मना किया गया था, क्योंकि इससे हिंदुओं के नाराज होने का डर था। उन्होंने राहुल गांधी द्वारा एक दिन पहले राज्य में उन लोगों पर की गई सख्त टिप्पणी की सराहना की, जो पार्टी में सत्तारूढ़ भाजपा की मदद कर रहे हैं।

बता दें शनिवार को अहमदाबाद में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए गांधी ने कहा था कि पार्टी का पहला काम कांग्रेस कार्यकर्ताओं और नेताओं के दो समूहों को अलग करना है - एक जो पार्टी की विचारधारा को अपने दिल में रखते हैं और जनता के साथ खड़े होते हैं और दूसरे जो जनता से कटे हुए हैं, जिनमें से आधे भाजपा के साथ हैं। उन्होंने ऐसे नेताओं और कार्यकर्ताओं को छांटने की जरूरत पर जोर दिया था और सख्त कार्रवाई, यहां तक कि निष्कासन की चेतावनी भी दी थी। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक संदेश में कहा, हिंदू धार्मिक गुरु शंकराचार्य जी की हजारों सालों से चली आ रही परंपरा है और वह आज भी चलन में है।

राहुल को उनके बयान के लिए दी बधाई

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में सिंह ने गांधी को उनके बयान के लिए बधाई दी। 1993 से 2003 तक मध्य प्रदेश के सीएम रहे राज्यसभा सांसद ने कहा कि आरएसएस के नेतृत्व वाला संघ परिवार हिंदुओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। उन्होंने कहा कि यह केवल धर्म के नाम पर समुदाय को गुमराह करता है और उनका शोषण करता है।

कांग्रेस विपक्ष की टिप्पणियों को देती है महत्व : डीके शिवकुमार

» डिप्टी सीएम बोले- हम खरगे के मार्गदर्शन में काम करते हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरू। कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस के भीतर जारी सत्ता संघर्ष के बीच पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मुख्यमंत्री सिद्धरमैया और उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार से एकजुट होकर काम करने और राज्य के विकास को प्राथमिकता देने का अनुरोध किया था। उन्होंने कहा था कि यदि वे अलग-अलग रहेंगे और अलग-अलग दिशाओं में आगे बढ़ेंगे तो यह ''कठिनाई'' भरा होगा। खरगे ने एक समारोह को संबोधित करते हुए जब यह टिप्पणी की थी तब उनके साथ मंच साझा कर रहे शिवकुमार मुस्कुराते रहे। खरगे की टिप्पणी पर प्रतिक्रिया देते हुए शिवकुमार ने कहा,''मैं मंच पर था। हम उनकी बात सुनेंगे और उनके मार्गदर्शन में चलेंगे। उन्होंने कहा हमारी विपक्षी पार्टी भी हमारा मार्गदर्शन करती है। हम उनकी बात पर भी गौर करते हैं।

वे हम पर बहुत टिप्पणी करते हैं, लेकिन हमें कभी बुरा नहीं लगता। जनता की भलाई के लिए जो भी करना होगा, हम वह करेंगे। राज्य के गृह मंत्री परमेश्वर ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने यह टिप्पणी क्यों की। परमेश्वर ने कहा, हम सभी एकजुट हैं। हम एकजुट होकर काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री सिद्धरमैया, उपमुख्यमंत्री डी के शिवकुमार, सभी मंत्री और पूरी सरकार केवल लोगों के लिए काम कर रही है। इस बीच केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा नेता प्रल्हाद जोशी ने हुबली में कहा कि खरगे द्वारा सिद्धरमैया और शिवकुमार को साथ चलने के लिए कहने का मतलब है कि वे एकजुट नहीं हैं। जोशी ने कहा, कांग्रेस अध्यक्ष ने स्वीकार किया है कि वे साथ नहीं हैं और कांग्रेस में सब कुछ ठीक नहीं है। उनकी स्थिति अब बहुत स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है।

रास नेता सदन को है प्रशिक्षण की जरूरत : कांग्रेस अध्यक्ष

» खरगे ने जेपी नड्डा को दी सलाह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जेपी नड्डा ने एक दिन पहले विपक्षी सांसदों को नियम पढ़ने की बात पर राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को भाजपा अध्यक्ष पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि विपक्षी दलों को प्रशिक्षण की नसीहत देने वाले नेता सदन को ही इसकी जरूरत है क्योंकि उनके ही सदस्य और मंत्री ही समय पर सदन में नहीं आते हैं।

राज्यसभा की कार्यवाही आरंभ होने पर उपसभापति हरिवंश आवश्यक दस्तावेज सदन के पटल पर रखवा रहे थे। इसी क्रम में उन्होंने राष्ट्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता और प्रबंधन संस्थान की परिषद के लिए निर्वाचन का प्रस्ताव पेश करने के लिए केंद्रीय मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू का नाम पुकारा, लेकिन वह सदन में उपस्थित नहीं थे।

पंजाब में बवाल! पुलिस से झड़प में कई किसान हुए घायल

» जम्मू-कटरा हाईवे अधिग्रहण को लेकर कर रहे थे प्रदर्शन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

श्रीहरगोबिंदपुर (गुरदासपुर)। पंजाब के गुरदासरपुर जिले के श्रीहरगोबिंदपुर साहिब के पास गांव नंगलझोर में किसान और पुलिस प्रशासन आमने-सामने हो गए। टकराव की स्थिति उत्पन्न होने के बाद किसानों की पगड़ियां भी उतर गई। हालांकि, इस टकराव के दौरान आठ किसान भी घायल हो गए। किसानों ने सरकार और पंजाब पुलिस के खिलाफ नारेबाजी की।

किसान नेताओं ने बताया कि श्रीहरगोबिंदपुर साहिब में गुजर रहे हाईवे को लेकर सरकार कब्जा लेना चाहती है, जबकि किसान नेता इसे नहीं देना चाहते है। इसी को लेकर किसानों-पुलिस प्रशासन के बीच टकराव हो गया। किसान नेताओं ने कहा कि सरकार की मनमानी नहीं चलने दी जाएगी।

खतरे की जद में एक और बैंक, लगेगा झटका

» इंडसइंड बैंक के शेयर में 20 प्रतिशत का आज लगा लोअर सर्किट

» डेरिवेटिव पोर्टफोलियों में गड़बड़ी के साथ निकली कई अन्य खामियां

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। भारत के एक और निजी बैंक पर खतरे के बादल मंडराना शुरू हो गये हैं। बैंक का नाम इंडसइंड है और इसके डेरिवेटिव पोर्टफोलियों में ढाई प्रतिशत तक की गड़बड़ियां पाई गयी है। इस खबर के पब्लिक डोमेने में आते ही आज इसके शेयरों में हाहाकार मच गया और 20 फीसदी का लोअर सर्किट लगा। जिससे बैंक की मार्केट वैल्यू में लगभग 14,000 करोड़ रुपये की गिरावट आई।

बैंक का शेयर 52 सप्ताह के निचले स्तर 720.35 रुपये पर पहुंच गया है जो एनएसई पर लोअर बैंड से नीचे चला गया। डेरिवेटिव एकाउट कम पूंजी के साथ बड़े निवेश करने की अनुमति देते हैं। और बैंक के इन्ही एकाउंट में गड़बड़ी पायी गयी है। यानि कि खतरा बड़ा है और बैंक के रास्ते में जोखिम ज्यादा है। बता दें कि इंडसइंड बैंक को बचाने के लिए बैंक के प्रमोटर हिंदुजा प्रमोटेड लेंडर ने अपनी चौथी तिमाही की आय या अगले फाइनेंशियल ईयर की पहली तिमाही में इस नुकसान की भरपाई करने की योजना बनाई हैं।

41 मिलियन ग्राहकों का है विशाल नेटवर्क

इंडसइंड बैंक के पास देश में 41 मिलियन ग्राहक है और 3,040 से ज्यादा ब्रांचेज के साथ करोबार कर रहा है। बैंक के पास 3,011 एटीएम हैं। यह एमसीएक्स के लिए एक सूचीबद्ध बैंकर है। इसके शेयर 1 अप्रैल 2013 से निफ्टी में 50 इंडेक्स का हिस्सा रहे हैं। यानि की इंडसइंड बैंक कोई मामूली बैंक नहीं है। यदि बैंक पर खतरा बड़ता है तो भारत के वित्तीय बजार में इसका असर व्यापक होगा। इंटरनल रिव्यू के दौरान बैंक के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो में 2.35 प्रतिशत की विसंगतियां पाए जाने के बाद बैंक की कुल संपति में लगभग 2,100 करोड़ रुपये की गिरावट आने की उम्मीद है।

करना पड़ेगा बैंक को लिटमस टेस्ट का सामना

सूत्रों के मुताबिक इंडसइंड बैंक को लिटमस टेस्ट का सामना करना पड़ेगा। गौरतलब है कि लिटमस टेस्ट उच्च पद के लिए संभावित उम्मीदवार से पूछा जाने वाला एक प्रश्न है, जिसका उत्तर यह निर्धारित करेगा कि नामांकन करने वाला अधिकारी नियुक्ति या नामांकन के साथ आगे बढ़ेगा या नहीं।

स्वामी 4 पीएम न्यूज़ नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।